भारत सरकार

कोयला मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 3751

जिसका उत्तर 11 दिसम्बर, 2019 को दिया जाना है

कोयला खदानों का कार्य–निष्पादन

3751. श्री हेमन्त पाटिलः
श्री श्रीरंग आप्पा बारणेः
श्री विनायक भाऊराव राऊतः
श्री रतनसिंह मगनसिंह राठौड़ः
डॉ॰ हिना विजयकुमार गावीतः

क्या **कोयला मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने देश में कोयला खदानों के कार्य–निष्पादन और लाभप्रदता का मूल्यांकन किया है और यदि हां, तो लाभ/हानि में चल रही कोयला खदानों के क्या नाम हैं;

(ख) उत्खनन कार्य के पश्चात् बंद की गई/बंद की जाने वाली कोयला खदानों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या कोयला खदानों के बंद होने के पश्चात् सरकार कामगारों को उचित मुआवजा देती है और यदि हां, तो विगत तीन वर्षों में प्रत्येक वर्ष तथा चालू वर्ष के दौरान कामगारों को कितने मुआवजे का भुगतान किया गया है;

(घ) सरकार द्वारा कोयला उत्पादन के घाटे के मुआवजे/कमी को पूरा करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं;

(ङ) क्या सरकार ने छोटी/बंद/परित्यक्त कोयला खदानों और नई कोयला खदानों की खोज और प्रचालन हेतु कोई योजना बनाई है; और

(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और सरकार द्वारा घरेलू कोयला उत्पादन को बढ़ाने तथा कोयले के आयात को घटाने हेतु अन्य क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री

(श्री प्रल्हाद जोशी)

(क): सीआईएल ने सूचित किया है कि वर्ष 2018-19 के दौरान, 420 इकाइयों के लिए लागत पत्रक तैयार किए गए थे जिन्हें लागत लेखांकन रिकार्ड नियमों के अनुसार 'लागत इकाइयां' कहा जाता है। 420 लागत इकाइयों में से, 199 इकाइयां भूमिगत और 221 इकाइयां ओपनकास्ट हैं। उपर्युक्त 420 लागत इकाइयों के निष्पादन का ब्यौरा निम्नानुसार है:

विवरण	भूमिगत	ओपकास्ट	कुल
लाभ कमाने वाली खानें	4	124	128
हानि देने वाली खानें	195	97	292
कुल	**199**	**221**	**420**

एससीसीएल ने वर्ष 2018-19 के दौरान 49 खानों (30 भूमिगत और 19 ओपनकास्ट) को संचालित किया है। वर्ष 2018-19 के दौरान 27 भूमिगत खानों को हानि हुई है और शेष 03 भूमिगत खान विकास के प्रथम चरण में हैं। सभी 19 ओपनकास्ट खानों को लाभ हुआ है।

(ख): वित्त वर्ष 2019-20 में उत्खनन कार्य पूरा होने के पश्चात् निम्नलिखित खानों के बन्द होने की संभावना है:

कंपनी	क्रम सं.	खान का नाम
एसईसीएल	1	बारतुंगा हिल यूजी खान
	2	पिनऔरा यूजी खान
	3	बलरामपुर यूजी खान
	4	बिश्रामपुर ओसी
डब्ल्यूसीएल	1	झरना (घोरावरी इंक्लाइन) यूजी
	2	पौनी ओसी
ईसीएल	1	राजपुरा ओसी
	2	सोदेपुर (आर) यूजी

(ग): कोयला खानों के बंद होने पर कामगारों को उनकी मौजूदा क्षमता और ग्रेड में नज़दीकी अन्य कोयला खानों में लाभप्रद रूप से तैनात किया जाता है। इसलिए कामगारों को मुआवज़े का भुगतान करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(घ): कोयला उत्पादन में हुए घाटे/उत्पादन में हुई कमियों को पूरा करने के लिए कोयला कंपनियों ने घरेलू कोयला उत्पादन को बढ़ाने के लिए नई परियोजनाओं को अभिनिर्धारित किया है। इस मामले में, सीआईएल ने 55 नई कोयला कंपनियों को अभिनिर्धारित किया है जिससे कोयला का मांग-आपूर्ति अंतर कम होगा।

(ड.) और (च): कोयला मंत्रालय, भारत सरकार ने कोयला संसाधनों अर्थात् क्षेत्रीय खोज एवं विस्तृत ड्रिलिंग के लिए दो स्कीमों का वित्त-पोषण किया है।

क्षेत्रीय खोज की स्कीम के, वर्ष 2018-19 के 100.74 रू/- के व्यय की तुलना में वर्ष 2019-20 के लिए 120 करोड़ रू/- का बजटीय प्रावधान किया गया है। इसी प्रकार वर्ष 2018-19 के

346.91 करोड़ रू/- के व्यय की तुलना में वर्ष 2019-20 के दौरान विस्तृत ड्रिलिंग संबंधी मामले में 817 करोड़ रू/- प्रदान किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त कोयला उत्पादन के संवर्धन के लिए, कोयला कंपनियों ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

i. कोयला कंपनियों ने उच्च स्तर के मशीनीकरण के साथ उच्चतर क्षमता वाली बड़ी खानों (10 एमटीवाई क्षमता से अधिक) की योजना बनाई है और कार्यान्वित किया है।
ii. कोयला कंपनियों ने संशोधित परियोजना रिपोर्टों के अनुमोदन के माध्यम से उनकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उनकी मौजूदा और चालू परियोजनाओं को बढ़ाया है।
iii. प्रचालनरत दक्षता में सुधार करने और पर्यावरणीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ओपनकास्ट खानों में बड़े स्तर पर सतही खनिकों को लगाया गया है। वर्ष 2018-19 के दौरान, सीआईएल में लगभग 50 प्रतिशत ओपनकास्ट कोयला उत्पादन सतही खनिकों के माध्यम से हुआ था।
iv. प्रचालनरत दक्षता में आगे और सुधार करने के लिए सीआईएल की 11 खानों में आईटी समर्थ ऑपरेटर इंडिपेंडेंट ट्रक डिस्पैच सिस्टम (ओआईटीडीएस) को शुरू किया गया है। वाहनों की ढुलाई के वास्तविक समय की मॉनिटरिंग को संभव करने के लिए मॉनिटरिंग उपकरणों की आईटी समर्थ आरएफआईडी प्रणाली को शुरू किया गया है जिससे असुरक्षित प्रचालनों और कार्यों के विरूद्ध सुधारात्मक उपाय करने में सहायता मिलेगी।
v. भूमिगत खानों में, मशीनीकृत उच्च स्तरीय उत्पादन तकनीक को शुरू किया गया है। इस समय 02 खानें पावर्ड सपोर्ट लांगवॉल टेक्नोलॉजी के साथ संचालित की जा रही हैं और 10 खानों को 16 सतत खनिक प्रौद्योगिकी के साथ संचालित किया जा रहा है।
vi. कोयले की तीव्र निकासी के लिए, 151 एमटीवाई की मौजूदा क्षमता वाली तीव्र लदान प्रणालियों के साथ 19 सिलोस प्रचालनरत हैं।

*****